॥ एक ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

॥ आदि सचु जुगादि सचु। है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥1॥

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार। चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार। भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरीआ भार। सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नाल। किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पाल। हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नाल ॥2॥

आसा महला १॥ आदि सचु जुगादि सचु। है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥1॥

तुकाराम ततु कुराणु जपीऐ जपु होवै गइआ। सुरति सिओ कहीऐ इहु विचारु वडिआईआ॥ होरु कदे न कहीऐ जब लगु धिआइआ॥ मति विचि रतनु जवाहरु मनि तनि भइआ भगवानु॥ जपु तपु सभु आराधना चोज वेद कहानु॥ पूजा पाठु नेम करम किआन रंग द्रिसटानु॥ सिफति सालाहि संगीता गावैनि जीअ जंतु॥ केते बार जपीऐ पूरन कामि अंतु॥ केती आरजा फेर केती पूरी आसा॥ केता कहणु कहीऐ केतीआ सिरि नाउ धिआवणु॥ केतीआ दाति जमाता केतीआ खप खप दवावणु॥ केतीआ ताटीआ वीथीआ रुखि वीरले पावणु॥ पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु॥ दिवसु रातिंदा दुइ दाई दाइआ॥